Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on "_ प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत।"(Note ---2)

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत।

(ii) स्मारक और भग्नावशेष- प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में प्राचीन भवनों और भग्नावशेषों का भी विशेष महत्व है। प्राचीनकाल के स्मारकों तथा भग्नावशेषों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करके तत्कालीन इतिहास के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त की जा सकती है । यद्यपि स्मारक और भग्नावशेष राजनीतिक स्थिति पर तो विशेष प्रकाश नहीं डालते, किन्तु इनसे धार्मिक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है ।

प्रत्येक काल के स्मारक और भग्नावशेष उस काल की कला, शैली तथा धर्म के प्रतीक होते हैं। प्राचीन स्मारकों तथा कलाकृतियों की प्राचीनता का अध्ययन करके कालक्रम का भी निर्धारण किया जा सकता है। प्राचीनकाल के महलों और मन्दिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए,

उत्तर भारत के मन्दिरों की अपनी कुछ विशेषताएं हैं, उनकी कला की शैली 'नागर-शैली' कहलाती है। इसी प्रकार दक्षिण भारत के मन्दिरों की कला 'द्रविण-शैली' कहलाती है ।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में हुए उत्खननों से प्राप्त भग्नावशेषों से सम्भवत: विश्व की प्राचीनतम सभ्यता 'सिन्धु सभ्यता' को जानकारी हुई। सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों के उत्खनन से प्राप्त प्रचुर सामग्री के अध्ययन से तत्कालीन मानव जीवन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

इसी प्रकार तक्षशिला में हुए उत्खननों से प्राप्त भग्नावशेषों से ज्ञात होता है कि यह नगरी कम से कम तीन बार बनी व नष्ट हुई। पाटलिपुत्र में हुए उत्खनन से मौर्यों के विषय में अनेक नवीन जानकारियाँ प्राप्त हुईं। गुप्तकालीन मन्दिरों; उदाहरणार्थ- कानपुर के पास स्थित भीतरगाँव का मन्दिर, नचनाकुठारा का पार्वती मन्दिर, सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर और देवगढ़ का दशावतार

मन्दिर से गुप्तकालीन संस्कृति पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। इसी प्रकार सांची, भरहुत खजुराहो, महाबलिपुरम, अजन्ता, एलोरा, नासिक आदि अनेक स्थानों से प्राप्त प्राचीन स्मारकों व भग्नावशेषों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

विदेशों में भी अनेक ऐसे स्मारक मिले हैं, जो भारत के उन देशों के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय आस्थाओं पर आधारित अनेक स्मारक हैं। जावा में दींग के शिव मन्दिर, मध्य जावा के बोरोबुदूर तथा प्रम्बनम के विशाल मन्दिरों की मर्तियाँ तथा कम्बोज के अंगकोरवाट व अंगकोरथोम के भग्नावशेषों से सिद्ध होता है कि भारतीयों ने वहाँ अपने उपनिवेशों की स्थापना की थी तथा अपनी संस्कृति का प्रचारप्रसार किया था। इनके अतिरिक्त मलाया, लंका तथा बाली द्वीपों में भी अनेक मन्दिर व स्मारक हैं, जो इन देशों से भारत के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हैं।

References: Internet & Competitive books.